पी.जी.डी.टी.-1

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

जून, 2008

पी.जी.डी.टी.-1 : अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।*

भाग क

1. राष्ट्रीय एकता और सामासिक संस्कृति के विकास में अनुवाद के महत्त्व पर प्रकाश डालें । 20

अथवा

अनुवाद में अर्थग्रहण तथा अर्थांतरण की समस्याओं का सोदाहरण विवेचन करें ।

2. शब्दकोश निर्माण प्रक्रिया का संक्षिप्त परिचय दें । 20

अथवा

अनुवाद पुनरीक्षण का अर्थ स्पष्ट करते हुए पुनरीक्षण प्रक्रिया को समझाएँ ।

3. किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : *2×10=20*

(क) अंतःभाषिक अनुवाद

(ख) साहित्य के अनुवाद की सीमाएँ

(ग) शब्दकोशों में संकेत चिह्नों की विभिन्न कोटियाँ

(घ) सामग्री संकलन तथा शब्दकोश निर्माण में कम्प्यूटर का प्रयोग

4. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : *5×2=10*

(i) A friend in need is a friend indeed.

(ii) Familiarity breeds contempt.

(iii) To build castles in the air.

(iv) Light as air.

(v) Where there is a will, there is a way.

अथवा

निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

(i)	भगवान के घर देर है अंधेर नहीं	(a)	A bird in hand is worth two in the bush
(ii)	जो गरजते हैं वे बरसते नहीं	(b)	To carry coals to Newcastle
(iii)	आधी तज सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे	(c)	Barking dogs seldom bite
(iv)	उल्टे बाँस बरेली को	(d)	The mills of God grind slowly but they grind extremely fine
(v)	जैसे को तैसा	(e)	To pay back in the same coin

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : 10

(i) किसी कही हुई बात को फिर से कहना _____ है ।

(ii) जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे _____ कहते हैं ।

(iii) एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ का अंतरण यदि उसी भाषा में किया जाए तो यह _____ अनुवाद कहलाता है ।

(iv) _____ का अर्थ है किसी पाठ का गद्य में किया गया अनुवाद ।

(v) विपर्याय कोश में शब्दों के _____ या विपर्याय दिए जाते हैं ।

अथवा

निम्नलिखित शब्दों को कोश-क्रम में लिखिए :

(i) उपलब्ध, अजा, कर्तव्य, अनुवाद, उपयुक्त, क्षमा, अज्ञात, निशा, उपर्युक्त, निषाद ।

(ii) Ornament, Correct, Least, Plea, Coward, World, Sober, Bless, Obscure, Season.

6. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 10

Abstinence is a good thing but it should always be practiced in moderation. But, for certain things, there should be no moderation at all. For certain items, self-denial and complete forbearance would be the right

choice. Take, for example, plastic bags. They may be a great convenience but are surely not environmentally benign, being extremely hard to dispose of and more likely to choke drains and gutters. It is not a trivial problem at all. Given the ever increasing use of plastic bags and cups, an environmental emergency seems to be building up. Should there not be a policy to mitigate the damage ? The directive ought to be to make available 'green' — nature-friendly biodegradable plastic bags at low cost.

अथवा

The book Mantra-Brahmana formed the nucleus of most of the domestic ceremonials developed elaborately by the later lawgivers (स्मृतिकार). Judged from the linguistic point of view, the book is a very early composition. Its affinity with the Vedic language shows the antiquity of the book. The language bears the stamp of the transitional period. The admixture of Vedic and medieval forms of expression shows that it is a composition of the later part of the Vedic age. But its dissimilarity from the language of the lawbooks (स्मृतियाँ) shows that it is separated from them by as many centuries as it is from the Vedas. It is undoubtedly earlier than the Mantra-Patha, as is evident from its difference from the latter in various ways.

7. निम्नलिखित का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : 10

एक हद तक शारीरिक सुविधा और आराम का होना ज़रूरी है, लेकिन उस हद से आगे बढ़ने पर ये सुविधाएँ और आराम सहायक बनने के बजाय हमारी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक बन जाते हैं । इसलिए बेहद ज़रूरतें बढ़ाने और उन्हें पूरा करने की आदत निरा भ्रमजाल ही है । मनुष्य की शारीरिक ज़रूरतें पूरी करने का, यहाँ तक कि उसकी बौद्धिक ज़रूरतें पूरी करने का भी, एक हद के बाद अंत आना चाहिए; क्योंकि इस मर्यादा को लाँघने पर वह प्रयत्न शारीरिक और बौद्धिक विलास का रूप ले लेता है । मनुष्य को अपने शारीरिक सुखों और सांस्कृतिक सुविधाओं की ऐसे ढंग से व्यवस्था करनी चाहिए कि वे उसकी मानव-सेवा में बाधक न बनें ।

अथवा

पहले जल-संकट प्रायः गर्मियों के दिनों में आता था । अब यह वर्ष भर बना रहता है । पानी रोकने का समयसिद्ध तरीक़ा तालाब, बावड़ी आदि रहे हैं । विकास की नई योजनाओं में इन तरीक़ों की बहुत उपेक्षा हुई है । न सिर्फ़ शहरों में, बल्कि गाँवों में भी तालाबों को समतल कर वहाँ मकान, दुकान, मैदान, बस-स्टैण्ड आदि बना लिए गए हैं । जो पानी यहाँ रुककर साल भर ठहरता था, इस इलाक़े के भूजल को ऊपर उठाता था, उसे हमने नष्ट कर दिया है । उसके बदले हमने आधुनिक माने गए ट्यूबवैल, नलकूप, हैंडपंप आदि लगाकर पानी निकाला है । भरना बंद किया और निकालने की गति राक्षसी कर दी ।